IJETMR
International Journal of Engineering Technologies and Management Research
A Knowledge Repository

विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

डॉ. अनूप शर्मा [1], डॉ. शशि जोशी [2]
[1, 2] अध्यक्ष : हिन्दी विभाग शासकीय माधव विज्ञान महाविद्यालय, उज्जैन

Abstract:
भूमण्डलीकरण हमारे समय की ऐतिहासिक अवधारणा है जिसने वर्तमान परिदृश्य में विस्मयकारी परिवर्तन किया है। वैसे भूमण्डलीकरण की अवधारणा कोई नई अवधारणा नहीं है और न ही भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया ही अकस्मात् आयी है, फॉर ईस्टर्न इकॉनामिक रिव्यू के पूर्व संपादक नयन चन्दा के अनुसार – ''बोरोबुदूर मंदिर का निर्माण भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया के 840 ई. में होने का प्रमाण है जब भारत बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को जावावासी कलाकारों ने दीवारों पर उकेरा।'' फिर सिकन्दर महान से लेकर चंगेज खाँ और नेपोलियन ने भी भूमण्डलीकरण की दिशा में सर्वोच्च प्रयास किये। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया उन्नीसवीं सदी के मध्य से प्रथम विश्वयुद्ध के आरंभ तक त्वरित रही।

Keywords: भूमण्डलीकरण; विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी.

Cite This Article: डॉ. अनूप शर्मा, डॉ. शशि जोशी. (2017). "विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी पर भूमंडलीकरण का प्रभाव." *International Journal of Engineering Technologies and Management Research,* 4(12:SE), 89-91. DOI: 10.5281/zenodo.1163023.

1. Introduction

1970 के दशक से ऐसे परिवर्तन हुए जिन्होंने भूमण्डलीकरण के स्वरूप में मूलभूत अंतर ला दिया। गिरीश मिश्र के अनुसार अमरीका अपनी मुद्रा डालर का मूल्य स्थिर बनाए रखने के वादे से हट गया। न केवल डॉलर बल्कि अन्य परिवर्तनीय मुद्राओं को अपनी परस्पर विनिमय दर बाजार की शक्तियों द्वारा निर्धारित होने के लिये छोड़ दिया गया। इसके साथ ही भूमंडलीय पूंजी बाजार का जन्म हुआ।'' भूमण्डलीकरण पूँजीवादी सोच की अवधारणा है।

भूमण्डलीकरण की अवधारणा के संबंध में 1998 में स्टॉकहोम सम्मेलन में विचार विमर्श किया गया था, जिसे अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र नामक पत्रिका में प्रकाशित किया गया था। इसके अनुसार – भूमण्डलीकरण बहुलवादी है, जो सम्पूर्ण संसार की विभिन्नताओं का समावेश करती हैं इसमें चार तत्व सम्मिलित होते हैं :–

1. संसार के देशों में बिना किसी अवरोध के विभिन्न वस्तुओं का आदान–प्रदान संभव बनाने के लिए व्यापार अवरोधों को कम करना।
2. आधुनिक प्रौद्योगिकी का निर्बाध प्रवाह संभव बनाने हेतु उपयुक्त वातावरण बनाना
3. विभिन्न राष्ट्रों में पूंजी का स्वतंत्र प्रवाह संभव बनाने हेतु आवश्यक परिस्थितियाँ पैदा करना।
4. संसार में विभिन्न देशों में श्रम का प्रवाह प्रसारित करना।

इस अवधारणा के परिदृश्य में आते ही विज्ञान और टेक्नॉलॉजी के क्षेत्र में विकास की जैसे बाढ़ ही आ गई। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विकासशील देशों में अपने पैर फैलाने शुरू किया। भारत उनके लिये बहुत बड़ा बाजार था। उपभोक्तावादी संस्कृति ने जन्म लिया। बाजारीकरण, वैश्वीकरण, नवउदारवाद जैसे पदों से

परिचय हुआ। आत्मकेन्द्रित व्यक्तिवादिता बढ़ने लगी। आत्मरति चरित्रों का निर्माण हुआ। यंत्रीकरण का वर्चस्व दिखाई देने लगा। विज्ञान ही नहीं कृषि, शिक्षा प्रशासन, इंजीनियरिंग, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में नई टेक्नालॉजी का निर्माण हुआ। इन तकनीकों के कई लाभ हुए तो नुकसान भी हुए।

वर्तमान युग विज्ञान और टेक्नालॉजी का युग है और उसका गहरा प्रभाव हम आज के युग में देख सकते हैं। विज्ञान ने इंसान के सामने आने वाली कई किस्म की दिक्कतों को दूर करने के साधन जुटाए, पर विज्ञान और टेक्नालॉजी के बीच रिश्ता जटिल है। अमूमन लोग विज्ञान और टेक्नालॉजी को एक मान लेते हैं। उपभोक्तावादी तकनीकी और समाज के सैन्यीकरण की वजह से विज्ञान और तकनीकी का यह असर फायदे के साथ–साथ नुकसान का भी रहा है। द्वितीय–विश्वयुद्ध के परिणाम से हम अनभिज्ञ नहीं है। जापान के शहर हिरोशिमा व नागासाकी पर बम गिराए गए एवं मानवीयता को आहत किया गया। इसके पीछे महाशक्तियों के इरादे और षड़यन्त्रों को हम जानते हैं। वर्तमान परिदृश्य में विज्ञान और टेक्नालॉजी का रिमोट कन्ट्रोल पूँजीवादी शक्तिों के हाथ में है। सारे विश्व को अधीन करना उसका उद्देश्य है, जिसे वह विश्वग्राम का नाम देती है। सबके अस्तित्व को अपने भीतर लील जाना जैसे बड़ी मछली छोटी–छोटी मछलियों को खाती है, उसे ही हम भूमण्डलकीण के नाम से जानते हैं।

डॉ. अ.प्र. शुक्ल ने अपने आलेख 'विज्ञान में आदिम व अनमोल में लिखा है – ''आजादी के बाद से भारतीय विज्ञान का बढ़ता पिछड़ापन, जैसा कि अंतर्राष्ट्रीय मानदण्डों से दिखाई देता है। विज्ञान के विश्वव्यापी संसर्ग की प्रक्रिया का यह अंग है। यह प्रक्रिया है, वैज्ञानिक जानकारी को बाजार के माल में तब्दील करना, विज्ञान की भूमिका एक ऐसे कुलीन विशेषज्ञ के रूप में तैयार करना जिसकी सामाजिक जिम्मेदारियाँ उसे वेतन देने वाली नौकरशाही तय करती है। इस प्रक्रिया में प्रतिभा पलायन की ओर जोड़कर तीसरी दुनिया के हम विज्ञानी अपने यहाँ की गरीबी बौर व्यवसायिक पिछड़ेपन को भूलकर अमरीका के कुलीन विज्ञानियों में अपनी पहचान ढूँढने लगते हैं। '' और इस तरह तीसरी दुनिया के वैज्ञानिकों में उनका पिछलग्गू बनने की भावना घर जाती है। सामाजिक पिछड़ेपन से कई प्रकार की भावना घर कर जाती है। यही कारण है कि 'इनोवेशन' के क्षेत्र में हम पीछे रह जाते हैं।

हमारे यहाँ विदेशी कम्पनी की चीजों की भरमार है, बाजार है और उसके भारी मात्रा में ग्राहक हैं जिसका मुनाफा विदेशी कम्पनियों को चला जाता है। यद्यपि चकाचौंध ऐसी है जिससे मालूम पड़ता कि विकास हो रहा है किन्तु वास्तविक विकास तो पूँजीवादी राष्ट्रों का ही होता है।

इस दौर की सबसे बड़ी क्रान्ति सूचना क्रान्ति है। हर व्यक्ति के हाथ में मोबाइल दिखाई देता हैं कम्प्यूटर, लेपटॉप, टैबलेट तो घर–घर में उपलब्ध है। विज्ञान का उद्भुत करिश्मा है कि दूरियॉ अब नहीं रही। आप कहीं भी बैठकर देश के किसी भी कोने में बैठकर कहीं बात कर सकते हैं। घर के किसी भी कोने में बैठकर कहीं की लायब्रेरी में पढ़ सकते हैं, दूरदर्शन पर देख सकते हैं। किन्तु हम नेपथ्य में देखें तो ज्ञात होता है कि फोन पर बात कर लेने पर भी हमारी संगठन शक्ति कमजोर हो रही है। रिश्तों सम्बन्धों में जटिलता बढ़ रही है। आत्मकेन्द्रित समाज पनप रहा है। आपसी संवाद नहीं हो पा रहा है। संक्षिप्त भाषा के प्रयोग से सम्बन्धों का आत्मीय ताप गायब हो रहा है। सूचनाएँ बढ़ रही हैं किन्तु भाषा समाप्त हो रही है। ऑकड़े स्टोर हो रहे हैं किन्तु स्मरण शक्ति कमजोर हो रही है। स्वास्थ्य बिगड़ रहा है एक ही जगह लगातार देखते रहने से आधि व्याधि बढ़ रही है। बगैर सम्बन्ध हुए बातचीत हो रही है किन्तु आपसी विश्वास वाले रिश्ते नहीं पनप रहे हैं।

साहित्य की पठनीयता कम हो रही है जिसके कारण हम अपनी वैचारिक, काल्पनिक व स्तरीय अभिव्यक्ति के वैभव को खो रहे हैं। भूमण्डलीकरण के कारण प्रतिस्पर्द्धा भी बढ़ी हैं विश्व के विकसित देश के साथ ही साथ भारत जैसे विकासशील देश ने भी अपने आपको तकनीक से समृद्ध बना लिया। भारत विश्व के उन

कुछ देशों में शामिल है, जहाँ अलग–अलग विषयों में शोध हो रहे है। सैन्य साधनों, मिसाइल्स, रॉकेट सिस्टम, अधिक दूरी तक मारक क्षमता वाली मिसाइल्स परमाणु बम इत्यादि के निर्माण हो रहे हैं। जनसंहारक शस्त्रों से मानवता को नष्ट करने का उपक्रम हो रहा है। इनमें नाभिकीय हथियार, विस्फोट, विकिरण और रेडियोधर्मी प्रभावों द्वारा कई दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं।

भूमण्डलीकरण ने कृषि तकनीक को भी बहुत हद तक प्रभावित किया है कृषि क्षेत्र में यंत्रीकरण हो रहा है। अब वैज्ञानिक संयंत्रों से कृषि करना सरल हो गया। पहले जो कार्य किसान कई दिनों में करते थे, मशीनें पल भर में ही कर देती हैं। रासायनिक खादों का प्रयोग खेती में बहुतायत के लिये हो रहा है। रासायनिक खादों ने मनुष्य के पाचन सिस्टम को प्रभावित किया है। हम पुनः जैविक खेती की ओर जा रहे हैं। मशीनों से काम होने के कारण श्रम शक्ति का भी ह्रास हो रहा है। बीमारियों का खतरा बढ़ गया है।

चिकित्सा के क्षेत्र में भी कई परिवर्तन आये है। कई मशीनों का निर्माण हुआ है। मनुष्य के स्वास्थ्य की जाँच के लिये कई मशीने हैं और ऊर्जा से प्रकाश व उष्मा को ग्रहण कर उपयोग किया जा रहा है। नये–नये अविष्कारों ने मानव जीवन को सुविधा युक्त व रफ्तार वाला बना दिया है।

विज्ञान और तकनीक के विस्तार से नए–नए सवाल पैदा हो रहे हैं। नई प्रौद्योगिकियों के अपने ही राजनीतिक आर्थिक समीकरण हैं विकासशील देशों की विकसित देशों पर निर्भरता बढ़ गयी है, इससे आर्थिक आत्मनिर्भरता का सपना अधूरा रह गया है। सांस्कृतिक स्वायत्तता का खतरा बढ़ गया है। डॉ. ए.पी. जे. अब्दुल कलाम ने 'स्वप्न और संदेश' नामक लेख में लिखा है – आइंस्टाइन कहता है– ''मैं अपने दोस्त वर्नर हाइसनबर्ग के विचार दोहराना चाहूँगा – आप जानते ही हैं कि पश्चिम में हमने एक समुद्री जहाज का निर्माण किया है। उसमें हर तरह की सुख सुविधा है लेकिन एक चीज नदारद है – उसमें दिशासूचक नहीं हैं, जो उसे बता सके कि किस दिशा की तरफ बढ़ना हैं। टैगोर तथा गाँधी, अध्यात्मिक पूर्वजों को यह दिशा–सूचक मिल गया था। इस यंत्र को मानव रूपी जहाज में क्यों नहीं रखा जा सकता।'' यदि सही तकनीक व प्रौद्योगिकी रही तो विज्ञान से धरती पर स्वर्ग की कल्पना साकार होगी।

संदर्भ –

1. समय समाज साहित्य – प्रभारक श्रोत्रिय
2. भारत पतन की ओर – टी. एन. शेषन
3. तेजस्वी मन – ए.पी. जे. अब्दुल कलाम
4. विज्ञान तकनीक और समाज – सं. प्रो. यशपाल व्यास
5. पहल अंक 68 – सं. ज्ञानरंजन
6. पहल अंक 70 – सं. ज्ञानरंजन
7. वागर्थ – 20 – सं. प्रभारक श्रोत्रिय

*Corresponding author.
E-mail address: profshashijoshi@ gmail.com